एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्वारपाठा की उन्नत खेती

(*राम लखन मीना)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: meenahort7244@gmail.com

ग्वारपाठा या घृत कुमारी एलोवेरा व जिसका वानस्पतिक नाम *एलो बारबन्डसिस* है तथा लिलिऐसी परिवार का सदस्य है। घृत कुमारी का पौधा बिना तने का या बहुत ही छोटे तने का एक गूदेदार और रसीला पौधा होता है इसका फैलाव नीचे से निकलती शाखाओं द्वारा होता है। इसकी पत्तियां भालाकार, मोटी और मांसल होती हैं जिनका रंग, हरा, हरा–स्लेटी होने के साथ कुछ किस्मों में पत्ती के ऊपरी और निचली सतह पर सफेद धब्बे होते हैं। पत्ती के किनारों पर की सफेद छोटे दाँतों की एक पंक्ति होती है। गर्मी के मौसम में पीले रंग के फूल उत्पन्न होते हैं। एलोवेरा में कई ओषधीय गुण पाये जाते हैं, जो कि विभिन्न प्रकार की बीमारियो के उपचार के आयुवेदिक एवं युनानी पद्धति में प्रयोग किया जाता है। जैसे पेट के कीडो,पेट दर्द,चर्म रोग,जलने पर नेत्र रोग,चेहरे की चमक बढाने वाली त्वचा क्रीम एवं सौन्दर्य प्रसाधन तथा सामान्य शक्तिवर्धक टोनिक के रूप में उपयोगी है। उसके ओषधीय गुणो के कारण इसे बगीचो में तथा घर के आसपास लगाया जाता है। आजकल इस पौधे की बढ़ती मांग के कारण कृषक व्यवसायिक रूप से इसकी खेती को अपना रहे है। तथा समुचित लाभ प्राप्त कर रहे है।

इसकी खेती से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसान भाई निम्न बाते ध्यान में रखे :-

जलवायु एवं मृदा:– यह उष्ण तथा समशीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रो में सफलता पुर्वक उगाया जा सकता है। कम वर्षा तथा अधिक तापमान वाले क्षेत्रो मे भी इसकी खेती की जा सकती है। इस की खेती किसी भी प्रकार की भुमि मे की जा सकती है। किन्तु जलमग्न भुमि में नही उगाया जा सकता है। बुलई दोमट भुमि जिसका पी. एच मान 6.5-8 के मध्य हो तथा उचित जल निकास की व्यवस्था हो उपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी :– ग्रीष्म काल में अच्छी तरह खेत को तेयार करके जल निकास की नालिया बना लेना चाहिये तथा वर्षा ऋतु में उपयुक्त नमी की अवस्था में इसके पोधे को 50 x 50 सेमी दूरी पर मेढ अथवा समतल खेत में लगाया जाता है। जिसमे प्रति हेक्टर पोधो की सख्या 40,000 से 50,000 की आवश्यकता होती है। इसकी रोपाई जुन–जुलाई माह में की जाती है। परन्तु सिचित दशा में इसकी रोपाई फरवरी में भी की जाती है।

प्रवर्धन विधि एव रोपाई :–इसका प्रवर्धन वानस्पतिक विधि से होता है। व्यस्क पोधो के आसपास से निकलने वाले चार पाँच पत्तियो युक्त छोटे पोधे उपयुक्त होते है। इन सर्कस को मातृ पोधे से अलग करके खेत में रोपित करते है।

निराई गुड़ाई :–प्रारंभिक अवस्था में इसकी बढवार की गति धीमी होती है। अतः प्रारभिक तीन माह तक में 2–3 निराई–गुडाई की आवश्यकता होती है। क्योकि इस काल में विभिन्न खरपतवार तेजी से वृद्धि कर एलोवेरा की वृद्धि एवं विकास पर विपरित असर डालते है। 5–6 माह के बाद पौधे पर मिट्टी चढाए जिससे वे गिरे नही।

खाद एवं उर्वरकः– सामान्यता एलोवेरा की फसल को विशेष खाद अथवा उर्वरक की आवश्यकता नही होती है। परन्तु अच्छी बढवार एवं उपज के लिए 10–15 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद को अतिम जुताई के समय खेत में डालकर अच्छी तरह से मिला देना चाहिए।
इसके अलावा 50 किग्रा नत्रजन 25 किग्रा फास्फोरस एवं 25 किग्रा पोटाश देना चाहिए। तथा नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस और पोटाश की पुरी मात्रा रोपाई के समय देनी चाहिए। तथा शेष नत्रजन की मात्रा रोपाई के 1.5 -2 माह बाद देना चाहिए।

सिचाई :–एलोवरा को कम सिचाई की आवश्यकता होती है। यह असिचित दशा में उगाया जा सकता है। परन्तु सिचित अवस्था में उपज अधिक मिलती है। ग्रीष्मकाल में 20 दिन के अन्तराल पर सिचाई करना उचित रहता है।

पोध संरक्षण :– इस फसल में साधारण तथा कोई कीडे अथवा रोग का प्रकोप नही होता है। परन्तु भुमिगत तनो व जडो को सतह सड़न से नुकसान पहुचता है। जिनकी रोकथाम के लिए 60–70 किलोग्राम नीम की खली प्रति हेक्टेयर के अनुसार के अथवा 20–25 किग्रा क्लोरोपायरीफास डस्ट प्रति हेक्टेयर का भुरकाव करे। वर्षा ऋतु मे वनो एवं पत्तियो पर सड़न एव काले रंग के धब्बे पाये जाते है। जो फंफुद जनित रोग है। जिसके उपचार के लिए मेन्कोजेब (बावस्टिन) 2–3 ग्राम प्रतिलिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना उपयुक्त रहता है।

कटाई एवं उपजः– फसल की रोपाई के 7–8 माह बाद पत्तिया काटने लायक हो जाती है। इसके बाद दो 3 माह के अन्तराल से परिपक्व पत्तियो को काटते रहना चाहिए।
सिचित क्षेत्र में 30–40 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है। तथा दुसरे वर्ष में उत्थान 10–15 फीसदी बढ जाता है।

अतरवर्तीय फसल :– एलोवेरा की खेती अन्य फल वृक्ष ओषधीय वृक्ष या वनरोपित पेड़ो के बीच में सफलतापूर्वक की जा सकती है।